Self Respect

13-06-2014

✓ऊँच ते ऊँच भगवान् वही है, वह बाप भी है फिर शिक्षक भी है | पढ़ाते हैं | क्या पढ़ाते हैं? मनुष्य से देवता बनाते हैं | देवता से मनुष्य बनने में तुम बच्चों को 84 जन्म लगे हैं | और मनुष्य से देवता बनने में एक सेकण्ड लगता है | यह तो बच्चे जानते हैं – हम बाप की याद में बैठे हैं | वह हमारा टीचर भी है, सतगुरु भी है |

✓अब तुम पुरुषोत्तम बनने का पुरुषार्थ कर रहे हो | पुरुषोत्तम हैं यह देवतायें |

✓अब फिर आसुरी गुणों से दैवीगुणों में जाना पड़े | सतयुग में जाना पड़े | किसको? तुम बच्चों को |

✓तुम यहाँ बैठे हो, मनुष्य से देवता बनने के लिए | अभी है कलियुग | बहुत धर्म हो गये हैं | तुम बच्चों को रचता और रचना का परिचय ख़ुद बाप बैठ देते हैं | तुम सिर्फ़ ईश्वर, परमात्मा कहते थे | तुमको यह पता नहीं था कि वह बाप भी है, टीचर भी है, गुरु भी है | उनको कहा जाता है सतगुरु | अकालमूर्त भी कहा जाता है |

- ✓अकाल तख़्त मनुष्य का होता है, और कोई का नहीं होता है | तुम हर एक को तख़्त चाहिए | अकालमूर्त आत्मा यहाँ विराजमान है |
- ✓यह भी बाप ने बताया है तुम देवी-देवता नई दुनिया में रहते हो | वहाँ तो अपार सुख हैं | उन सुखों का अन्त नहीं पाया जाता है |
- ✓तुम संगमयुग पर हो | कलियुग की तरफ़ भी देख सकते हो, सतयुग की तरफ़ भी देख सकते हो | तुम संगमयुग पर साक्षी हो देखते हो |

- ✓बाप नई दुनिया स्थापन करते हैं | जहाँ पर बहुत थोड़े मनुष्य होते हैं | और कोई भी धर्म वाला नहीं आता है | सिर्फ़ तुम ही पहले-पहले आते हो | अभी तुम स्वर्ग में जाने का पुरुषार्थ कर रहे हो |
- ✓तुम मूलवतन निवासी थे | यहाँ पार्ट बजाने आये हो | तुम बच्चे आलराउन्ड पार्ट बजाने वाले हो |
- ✓बाप आकर तुम बच्चों को समझाते हैं – 84 जन्म तुम लेते हो | पहले-पहले मेरे से तुम बिछुड़ते हो | सतयुगी देवतायें ही पहले होते हैं |

- ✓ रचयिता और रचना के आदि, मध्य, अन्त का ज्ञान कोई शास्त्र में है नहीं | मैं तुमको सुनाता हूँ | फिर यह प्रायः लोप हो जाता है |
- ✓गायन भी है ना वन्दे मातरम् | कौन-सी मातायें, जिनकी वन्दना करते हैं? तुम मातायें हो, सारी सृष्टि को बहिश्त बनाती हो | भल पुरुष भी हैं, लेकिन मैजारिटी माताओं की है इसलिए बाप माताओं की महिमा करते हैं | बाप आकर तुमको इतनी महिमा लायक बनाते हैं |

✓निश्चित विजय के नशे में रह बाप की पदमगुणा मदद प्राप्त करने वाले मायाजीत भव

✓बाप की पदमगुणा मदद के पात्र बच्चे माया के वार को चैलेन्ज करते हैं कि आपका काम है आना और हमारा काम है विजय प्राप्त करना | वे माया के शेर रूप को चींटी समझते हैं क्योंकि जानते हैं कि माया का राज्य अब समाप्त होना है, हम अनेक बार के विजयी आत्माओं की विजय 100 परसेन्ट निश्चित है | यह निश्चित का नशा बाप की पदमगुणा मदद का अधिकार प्राप्त कराता है | इस नशे से सहज ही मायाजीत बन जाते हो |

✓गीता में भी राजयोग नाम आता है | बाप तुम्हें राजयोग सिखलाकर राजाई का वर्सा देते हैं |

✓अच्छा! मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमॉर्निंग | रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते |